The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 11 | November 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

वीर सावरकरः हिंदुत्व और भारतीय सांस्कृतिक विरासत

सीतू शुक्ला

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, स्वामी शुकदेवानंद कॉलेज, शाहजहांपुर, (सम्बद्ध एम.जे.पी. रूहेलखण्ड यूनिवर्सिटी, बरेली), उत्तर प्रदेश, भारत, Email- seetu121@gmail.com

प्रो० (डॉ०) आदित्य कुमार सिंह

अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, स्वामी शुकदेवानंद कॉलेज, शाहजहांपुर, (सम्बद्ध एम.जे.पी. रूहेलखण्ड यूनिवर्सिटी, बरेली), उत्तर प्रदेश, भारत, Email- adityassc@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17930006

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 27-11-2025

Published: 10-12-2025

Keywords:

हिंदुत्व, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय पहचान, परम्परा,

ABSTRACT

वीर विनायक दामोदर सावरकर आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन के उन प्रमुख विचारकों में, जिन्होंने हिंदुत्व की संकल्पना के माध्यम से भारतीय राष्ट्रीयता की एक विशिष्ट रूपरेखा प्रस्तुत की भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, और हिंदुत्व की वैचारिक संरचना के प्रमुख निर्माताओं में गिने जाते हैं। उनका हिंदुत्व केवल धार्मिक अवधारणा नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सभ्यतागत राष्ट्रीय पहचान का सूत्र है। सावरकर भारतीय सांस्कृतिक विरासत को राष्ट्रीय एकता का आधार मानते थे और मानते थे कि राष्ट्र की आत्मा उसकी संस्कृति, भाषा, इतिहास और सामूहिक स्मृति में निहित होती है। इस शोध–पत्र में हिंदुत्व की वैचारिक परिभाषा, उसके घटक तत्व, भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संदर्भ में इसकी भूमिका, तथा आधुनिक भारत की नीतियों में इसकी प्रतिध्वनियों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

उद्देश्य

1. सावरकर हिंदुत्व को केवल धार्मिक संप्रदाय नहीं, बल्कि सांस्कृतिक राष्ट्रीय पहचान के रूप में अध्ययन करना।
2. भारतीय संस्कृति, परंपराओं, भाषा और त्योहारों के संदर्भ में सावरकर के विचारों का अध्ययन कर यह दिखाना कि उनकी दृष्टि भारतीय सांस्कृतिक एकता और समरसता को समृद्ध कर रही हैं।
3. भारतीय सांस्कृतिक विरासत की पुर्नव्याख्या में सावरकर की भूमिका समझना, कि भारतीय समाज, परंपराओं, भाषा, इतिहास तथा राष्ट्रीय चरित्र को वे किस दृष्टि से देखते हैं, का अध्ययन करना।

मुख्य भाग

हिंदुत्व एक ऐसा शब्द है जो संपूर्ण मानव जाति के लिए आज भी अपूर्व स्फूर्ति तथा चैतन्यता का शोध बना हुआ है। इस शब्द से सम्बन्धित विचार महान है, रीति रिवाज एवं भावनाएं कितनी विविध और श्रेष्ठ हैं। हिंदुत्व कोई सामान्य शब्द नहीं है, यह एक परंपरा है ना कि एक धार्मिक आध्यात्मिक इतिहास है। विनायक दामोदर सावरकर लिए हिंदुत्व केवल धार्मिक पहचान नहीं, बल्कि ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय चेतना का समेकित रूप था, जो सिंधु से सागर तक फैली भारतीय भूमि, उसकी परंपराओं, स्मृतियों और जीवन मूल्यों से निर्मित होता है। सावरकर ने 'हिन्दू' की पहचान को पितृभूमि और पुण्यभूमि की साझा अनुभूति से जोड़ा और भारतीय राष्ट्र को एक सांस्कृतिक राष्ट्र के रूप में देखने पर बल दिया। इस दृष्टि में भारत की प्राचीन सभ्यता, लोकदेवताओं, त्योहारों, भाषाओं, साहित्य और सामूहिक स्मृति को राष्ट्रीय एकता की आधारभूमि माना गया, जिससे हिंदुत्व भारतीय सांस्कृतिक विरासत के पुनर्पाठ का वैचारिक माध्यम बनता है। हिंदुत्व के इस प्रतिपादन ने जहां एक ओर स्वतंत्रता संग्राम के दौर में राजनीतिक राष्ट्रवाद को सांस्कृतिक आधार देने का प्रयास किया, वहीं दूसरी ओर आधुनिक भारत में पहचान, बहुलता और धर्मनिरपेक्षता को लेकर चल रही बहसों के केंद्र में भी सावरकर के विचारों को ला खड़ा किया। परिणामस्वरूप, वीर सावरकर का हिंदुत्व आज भारतीय सांस्कृतिक विरासत, राष्ट्रवाद, सामाजिक सुधार और बहुसांस्कृतिक सह–अस्तित्व के विमर्शों का एक महत्वपूर्ण संदर्भ बिंदु बन चुका है, जिसे आलोचनात्मक और संतुलित दृष्टि से समझना इस शोध का मुख्य उद्देश्य है।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में कई वैचारिक धाराएँ रही हैं उदारवादी राष्ट्रवाद, समाजवादी विचारधारा, गांधीवाद, और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद। इन सभी धाराओं में एक विशिष्ट और क्रांतिकारी स्थान विनायक दामोदर सावरकर का है, जिन्होंने हिंदुत्व को केवल धार्मिक पहचान नहीं, बल्कि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का मूल सिद्धांत माना। उनके अनुसार भारत को एक "राष्ट्र" बनाने वाला तत्व केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं, बल्कि सांस्कृतिक एकता है। सावरकर की दृष्टि में भारतीयता की परिभाषा इस सांस्कृतिक सूत्र पर आधारित थी, समान संस्कृति, समान पवित्र भूमि, समान इतिहास, भाषा और साहित्यिक विरासत, राष्ट्र–भावना की अखंड चेतना इस प्रकार हिंदुत्व उनके लिए एक सांस्कृतिक–राष्ट्रीय पहचान का ढाँचा था, जो भारत की प्राचीन विरासत को आधुनिक राष्ट्रवाद से जोड़ने का प्रयास करता है।

सावरकर का जीवन–दर्शन और वैचारिक विकास

सावरकर का जन्म 1883 में महाराष्ट्र के भागुर गाँव में हुआ। किशोरावस्था से ही वे क्रांतिकारी गतिविधियों से जुड़ गए।

लंदन में अध्ययन के दौरान उन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद पर गहन अध्ययन किया और 1857 के विद्रोह को पहली संगठित राष्ट्रीय क्रांति के रूप में सिद्ध किया।

काला पानी की सजा, सेलुलर जेल की अमानवीय यातनाएँ और नीतिगत संघर्षों ने उनके विचारों को और परिपक्व बनाया। उन्होंने 'हिंदुत्वः Who is a Hindu' (1923) की रचना की, जो उनके सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का आधारभूत ग्रंथ माना जाता है।

हिंदुत्व की परिभाषा

सावरकर का विश्वास था कि 'हिंदुत्व' शब्द में भारत के संपूर्ण इतिहास का प्रतिनिधित्व करने की क्षमता है। अवधारणा और आदर्श, व्यवस्था और समाज, विचार और भावनाएँ, जो इस नाम के इर्द–गिर्द केंद्रित हैं, वे इतनी विविध और समृद्धशाली और इतनी सूक्ष्म,जटिल हैं कि हिंदुत्व शब्द के विश्लेषण के सभी प्रयासों से परे है। यह आज जिस रूप में है, उसे इस रूप में आने में कई 40 शताब्दियाँ लगी हैं। धर्म प्रवर्तकों और कवियों, विधि वेत्ताओं और कानून–निर्माताओं, नायकों और इतिहासकारों ने इस पर सदियों तक विचार किया, इसे जीया, इसके लिए वे लड़े और मरे। वास्तव में, क्या यह हमारी पूरी जाति के अनगिनत कार्यों का परिणाम नहीं है? हिंदुत्व एक शब्दमात्र नहीं है, बल्कि एक आध्यात्मिक इतिहास है। हिन्दू धर्म हिंदुत्व का केवल एक हिस्सा है, अंश मात्र है।

हिंदू राष्ट्र का निर्माण

सावरकर का कहना था कि 'हिन्दू', 'हिंदी', 'हिंदुस्तानी' और 'इंडियन' शब्दों को उनकी व्युत्पत्ति के संबंध में देखा जाए तो इन सभी की उत्पत्ति 'सिंधु', जिसे अंग्रेजी में 'इंडस' कहा जाता है, से हुई है और प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता से ही भारतीय उपमहाद्वीप में सिंधु नदी के तटों पर मानव बसाहटों से इसका संबंध रहा है। सावरकर ने हिन्दू राष्ट्र को एक प्राचीन और सतत परंपरा के रूप में व्याख्यायित करते हुए, इसे उत्तरी सीमा पर स्थित हिमालय पर्वत की तरह ठोस और अति विशाल बताया है और कहा है, पूर्व में वैदिक काल से लेकर हमारे पूर्वज, हमारे लोगों को धार्मिक, वंशीय, सांस्कृतिक और राजनीतिक इकाई के रूप में आकार देते रहे हैं। इस सब के परिणामस्वरूप, वैदिक काल के सिंधु व्यवस्थित रूप से बढ़ते हुए आज हिन्दू राष्ट्र में विकसित हुए हैं।

एक सिंधु राष्ट्र कैसे हिन्दू राष्ट्र बना? सावरकर वर्णन करते हैं कि इतिहास के एकदम प्रारंभ में, ये लोग अपने आप में सिंधुओं के रूप में जानते थे, लेकिन एक ठोस प्रमाण के अनुसार, वे अपने आसपास के राष्ट्रों में सप्त–सिंधु के नाम से भी जाने जाते थे। संस्कृत का 'स' अक्षर कई बार कुछ प्राकृत भाषाओं, भारतीय और गैर–भारतीय दोनों में 'ह' में बदलता रहा है। उदाहरण के लिए, उन्होंने बताया कि 'सप्त' शब्द, 'हप्त' में बदल गया और ऐसा केवल भारत की प्राकृत में ही नहीं हुआ, बल्कि यूरोपीय भाषाओं में भी हुआ। तो हमारे पास 'हप्ता', यानी सप्ताह, भारत में और यूरोप में 'हेप्टार्की', यानी एक राज्य या क्षेत्र है, जिसमें सात स्वायत्त शासकों द्वारा सरकार शामिल है, संस्कृत में 'केसरी' का अर्थ 'शेर' होता है, जो पुरानी हिंदी में 'केहरी' हो जाता है। 'सरस्वती' फारसी में 'हरवती' और 'असुर' 'अहुर' हो जाता है। वे कहते हैं, यह साबित करने के लिए पर्याप्त सबूत है कि हमारे राष्ट्र के वैदिक नाम 'सप्त सिंधु' का उल्लेख 'अवेस्ता' (पारसी धर्म की धार्मिक पुस्तक) में 'हप्त हिंदू' के रूप में किया गया

है। इस प्रकार सावरकर जोर देते हैं कि हम सिंधु या हिन्दू राष्ट्र से संबंध रखते हैं और यह एक ऐसा तथ्य है, जो पौराणिक काल तक में हमारे विद्वज्जनों को भलीभाँति ज्ञात था। हिन्दू राष्ट्र के क्रमागत विकास के सिद्धांत पर आगे बढ़ते हुए सावरकर कहते हैं कि हमारे सीमांत प्रांत, जिनसे होकर सिंधु नदी बहती थी, वे आज भी अपने प्राचीन नाम सिंधु राष्ट्र को अपनाए हुए हैं और पूरे संस्कृत साहित्य में सिंधु सौवीर पाते हैं, जिससे पता चलता है कि यह हमारी भौतिक राजनीति का महत्त्वपूर्ण और अभिन्न अंग है।

सावरकर ने हिंदुत्व को तीन मूल आधारों पर परिभाषित किया। पहला पितृभूमि, जिस भूमि से हमारा सांस्कृतिक और ऐतिहासिक जुड़ाव हो। दूसरा पुण्यभूमि, जहाँ हमारे धर्म, पूजा–पद्धतियाँ और परंपराएँ विकसित हुई हों। तीसरा संस्कृतिभूमि, जहाँ हमारी रीति–रिवाज, भाषा, मूल्यों और जीवन–दर्शन का निर्माण हुआ हो। ये तीनों तत्व मिलकर हिंदुत्व को एक सांस्कृतिक–राष्ट्रीय पहचान बनाते हैं।सावरकर का कहना था कि हिंदुत्व, हिन्दू धर्म से बड़ा है,क्योंकि वह अपने अन्दर जीवन–शैली, संस्कृति और सभ्यता को समाहित करता है। जिसका उद्देश्य धार्मिक समानता नहीं, बल्कि सांस्कृतिक एकता है।

हिंदुत्व और भारतीय सांस्कृतिक विरासत का संबंध

भारतीय सभ्यता विश्व की सबसे प्राचीन और बहुवर्णी सभ्यताओं में से एक है, जिसकी जड़ों में आध्यात्मिकता, सहअस्तित्व, सांस्कृतिक समृद्धि और सामाजिक सामंजस्य की धारा प्रवाहित होती है। इसी सांस्कृतिक प्रवाह में हिंदुत्व एक महत्वपूर्ण वैचारिक दृष्टिकोण के रूप में उभरता है, जो केवल धार्मिक पहचान मात्र नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सभ्यतागत चेतना का दार्शनिक प्रतिपादक है। हिंदुत्व मूलतः एक सांस्कृतिक अवधारणा है जो भारतीय जीवन–मूल्यों, परंपराओं, रीति–रिवाजों और सामूहिक चेतना को एक सूत्र में पिरोती है। सावरकर के अनुसार राष्ट्र, साझा विरासत को सांस्कृतिक विरासत को गौरवषाली ऐतिहासिक विकास के माध्यम से एकता के सूत्र बांधता है।

हिंदुत्व की मूलधाराः सांस्कृतिक एकात्मता का विचार

हिंदुत्व का आधार धर्म से अधिक संस्कृति पर है। यह भारत की उस निरंतर और अविरल सांस्कृतिक परंपरा का परिचायक है, जिसने वैदिक काल से लेकर आधुनिक युग तक असंख्य परिवर्तनों के बावजूद अपनी मौलिक पहचान बनाए रखी।

हिंदुत्व का उद्देश्य भारतीय जीवन के मौलिक मूल्यों जैसे सत्य, अहिंसा, कर्म, धर्म, मर्यादा, त्याग, कर्तव्य और प्रकृति–प्रेम को सामाजिक जीवन में प्रतिष्ठित करना है। यह मानव को केवल धार्मिक अनुशासन में नहीं, बल्कि नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आचरण में भी अनुशासित करता है।

भारतीय सांस्कृतिक विरासतः विविधता में एकता का दर्शन

भारत की सांस्कृतिक विरासत विविध रूपों में अभिव्यक्त होती है। जैसे वेदें उपनिषदों की आध्यात्मिकता, मंदिर स्थापत्य, योग, आयुर्वेद और दर्शन, संगीत, नृत्य और कला, त्योहारों और सामाजिक परंपराओं की बहुलता।

इन सभी आयामों से भारतीय संस्कृति न केवल जीवन–पद्धति की समृद्धता दर्शाती है बल्कि मानवता के सार्वभौमिक आदर्शों को भी रेखांकित करती है। हिंदुत्व इसी विविधता में निहित 'एकता' को पहचानता है और उसे राष्ट्रीय व सांस्कृतिक पहचान का स्तंभ मानता है।

हिंदुत्व भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का आधार है। इसका उद्देश्य किसी एक धर्म या समुदाय को श्रेष्ठ घोषित करना नहीं बल्कि भारत की सामूहिक सांस्कृतिक स्मृति को जागृत करना है। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद यह मानता है कि भारत की आत्मा उसकी संस्कृति में निहित है चाहे वह भाषा हो, कला हो, आचार–विचार या जीवन–दर्शन।

इस दृष्टिकोण के अनुसार भारतीय राष्ट्र का निर्माण केवल राजनीतिक सीमा या सत्ता पर नहीं, बल्कि उस साझा सांस्कृतिक चेतना पर आधारित है जो हजारों वर्ष पुरानी है।

हिंदुत्व उन मूल्यों का संरक्षण करता है जिनकी बदौलत भारतीय सभ्यता आज भी जीवंत और प्रगतिशील हैकृ

1. सर्वधर्मसमभाव और सहिष्णुताः सभी धर्मों के प्रति सम्मान का भाव।
2. धर्म आधारित जीवनशैलीः धर्म अर्थात् 'कर्तव्य और नैतिकता' पर आधारित जीवन।
3. प्रकृति के साथ सामंजस्यः नदियों, पर्वतों, वृक्षों, पशु–पक्षियों के प्रति आस्था एवं संरक्षण
4. कर्म और पुनर्जन्म का सिद्धांतः जीवन की निरंतरता और जिम्मेदारी का भाव।
5. परिवार और समाज केंद्रित जीवनः संयुक्त परिवार व्यवस्था और सामाजिक सहयोग का महत्त्व।

ये सभी मूल्य भारतीय सांस्कृतिक विरासत के मूल तत्व हैं, जिन्हें हिंदुत्व व्यवस्थित रूप से संरक्षित करता है।

हिंदुत्व का सामाजिक दृष्टिकोण

सावरकर एक समाज सुधारक भी थे, उनका कहना था कि उत्सव, लोक परंपराएँ, भारतीय रीति–रिवाज ये सभी राष्ट्र–भावना की वाहक होती है। भारतीय सामाजिक–सांस्कृतिक परंपराओं में कई सकारात्मक आयाम थे, परंतु कुछ कुरीतियाँ भी थीं। सावरकर ने इन कुरीतियों एवं रूढ़िवादी दृष्टिकोण का स्पष्ट विरोध किया। उनकी मान्यताएँ जाति–व्यवस्था का विरोध, अस्पृश्यता उन्मूलन, समान अधिकार, स्त्री–शिक्षा और महिला–सशक्तिकरण, विज्ञान और तर्कशीलता, हिंदुत्व का वह पक्ष बताता है कि वे भारत की सांस्कृतिक विरासत को समावेशी और आधुनिकी बनाना चाहते थे। जिसके निम्न आधार हैं –

(क) जाति–व्यवस्था का पुनर्परिभाषण

वे जन्माधारित जाति–व्यवस्था के कट्टर विरोधी थे। उनका मानना था कि जाति आधारित विभाजन राष्ट्र की एकता को तोड़ता है। उनकी दृष्टि में "हिंदुत्व" जाति–बद्ध नहीं, बल्कि सांस्कृतिक बंधुत्व का विचार था।

(ख) छुआछूत का खंडन

सावरकर सबसे पहले समाज सुधारक में थे जिन्होंने अपने समय में सामाजिक अस्पृश्यता को अपराध बताया। उन्होंने मंदिर प्रवेश आंदोलन, सार्वजनिक कुओं का उपयोग और सामूहिक भोजन जैसी गतिविधियों के माध्यम से सामाजिक एकता बढ़ाई।

(ग) स्त्री शिक्षा और समानता का समर्थन

उन्होंने हिंदू समाज में स्त्रियों की गौरवशाली परंपरा का उल्लेख करते हुए कहा कि राष्ट्र सशक्त तभी होगा जब उसकी महिलाएँ शिक्षित और स्वतंत्र हों। उन्होंने सीता–सावित्री की परंपराओं को केवल धार्मिक प्रतीक नहीं माना, बल्कि नैतिक शक्ति, साहस और सम्मान के रूप में देखा।

(घ)धर्म और जीवन–दर्शन

भारतीय धर्मों में बहुलतावाद, सहिष्णुता, और समन्वय की परंपरा है। सावरकर "धर्म" को संकीर्ण अर्थ में नहीं, बल्कि धार्मिक–सांस्कृतिक अनुभवों की कुल संपदा के रूप में देखते थे। आज के भारत में सामाजिक सुधारों की जो धारा चल रही है, वह काफी हद तक सावरकर के विचारों से प्रेरित है।

हिंदुत्व, सांस्कृतिक विरासत और आधुनिक भारत

आधुनिक भारत की वैचारिक धारा में वीर विनायक दामोदर सावरकर वह नाम हैं जिनकी विचारधारा विशेषकर हिंदुत्व, ने 20वीं सदी से लेकर 21वीं सदी के राष्ट्रीय विमर्श को गहराई से प्रभावित किया। सावरकर ने हिंदुत्व को केवल धार्मिक पहचान नहीं माना, बल्कि एक सांस्कृतिक–राष्ट्रीय पहचान के रूप में व्याख्यायित किया। आज भारत में राष्ट्रवाद, सांस्कृतिक पुनर्जागरण, सामाजिक सुधार, सुरक्षा नीति तथा राजनीतिक विचारधारा के कई क्षेत्रों में सावरकर का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

1. **हिंदुत्व का केंद्र सांस्कृतिक एकता**

   भाषा, भूगोल, सांस्कृतिक परंपराएँ और ऐतिहासिक अनुभव इस एकता के प्रमुख तत्व हैं। सावरकर के अनुसार भारत की राष्ट्रीय पहचान "राजनीतिक" नहीं बल्कि "सांस्कृतिक" आधारों पर निर्मित होती है।

2. **आधुनिक राष्ट्रवाद का आधार**

हिंदुत्व भारत को "सांस्कृतिक राष्ट्र" के रूप में परिभाषित करता है, जो विविधताओं के बीच एक साझा सभ्यतागत बंधन को मान्यता देता है।

3. सांस्कृतिक पुनर्जागरण

आज भारत में सांस्कृतिक विरासत, सभ्यतागत गौरव, प्राचीन परंपराओं, योग, आयुर्वेद, मंदिर–संस्कृति, सांस्कृतिक उत्सवों के पुनरुत्थान जैसी पहलें प्रबल रूप से उभर रही हैं। ये पहलें सावरकर के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के सिद्धांतों से मेल खाती हैं।

4. शिक्षा और सांस्कृतिक नीति

सावरकर हिंदी और संस्कृत आधारित भाषायी एकता के समर्थक थे। वे मानते थे कि भारतीय भाषाएँ भारत की सांस्कृतिक एकता का सबसे शक्तिशाली माध्यम हैं।

उन्होंने मराठी, संस्कृत और हिंदी के साहित्य को राष्ट्र–निर्माण का साधन माना।

नई शिक्षा नीति (2020) में भारतीय ज्ञान परंपरा, मातृभाषा, और सांस्कृतिक मूल्य शामिल करना, सावरकर के विचारों के अनुरूप है।

5. राष्ट्रवाद की समसामयिक व्याख्या

भारत की वर्तमान राष्ट्रवादी राजनीति में सावरकर की विचारधारा का प्रभाव व्यापक है। सावकर देशभक्ति, राष्ट्रीय सुरक्षा, सैन्य सशक्तिकरण, आतंरिक सुरक्षा और राष्ट्रीय एकता आत्मनिर्भर रक्षा के प्रबल समर्थक थे। आज भारत सरकार की नीतियों में हिंदुत्व की वैचारिक पृष्ठभूमि दिखाई देती है।

6. सुरक्षा और सामरिक दृष्टिकोण

सावरकर भारत को एक सशक्त सैन्य शक्ति के रूप में देखना चाहते थे। आज भारत रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता, नौसेना का विस्तार, सीमा सुरक्षा, आधुनिक सैन्य तकनीकी विकास जैसे क्षेत्रों में जो कदम उठा रहा है, वे सावरकर के ''सुरक्षित राष्ट्र'' की अवधारणा की दिशा में हैं। आत्मनिर्भर रक्षा नीति" में उनका दृष्टिकोण प्रतिध्वनित होता है।

7. राजनीतिक परिदृश्य

कई राजनीतिक दलों और संगठनों की विचारधारा में सावरकर का प्रभाव दिखता है। राष्ट्रीय पहचान, सांस्कृतिक गौरव, और एकात्मक राष्ट्रवाद उनके विचारों से प्रभावित हैं। सावरकर समान कानूनों को राष्ट्रीय एकता

का आधार मानते थे। आज समान नागरिक संहिता (UCC) पर चल रही बहसें उनके दृष्टिकोण को नई प्रासंगिकता देती हैं।

8. वैश्विक परिप्रेक्ष्य

भारत आज वैश्विक मंच पर अपनी सांस्कृतिक पहचान को मजबूती से प्रस्तुत कर रहा है।अंतरराष्ट्रीय योग दिवस, सांस्कृतिक कूटनीति, भारतीय सभ्यता का वैश्वीकरण। ये सभी सावरकर के उस विचार को मजबूत करते हैं कि भारत एक सांस्कृतिक महासत्ता है।

सावरकर किसी भी वैचारिक व्यक्तित्व की तरह आलोचनाओं से मुक्त नहीं हैं। हिंदुत्व को धार्मिक–सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की ओर झुकाने का आरोप। गांधी हत्या के संदर्भ में राजनीतिक वाद–विवाद (हालाँकि वे कानूनी रूप से दोषमुक्त रहे)। मुस्लिम समुदाय के प्रति उनके विचारों की आलोचना। बहुलतावादी भारतीयता पर सांस्कृतिक बहुमतवाद का आरोप। इन आलोचनाओं के बावजूद, सावरकर का योगदान यह है कि उन्होंने भारतीय राष्ट्रीयता के सांस्कृतिक आधार को नए रूप में प्रस्तुत किया।

निष्कर्ष

हिंदुत्व और भारतीय सांस्कृतिक विरासत का संबंध अत्यंत गहरा, व्यापक और बहुमुखी है। हिंदुत्व केवल धार्मिक विचारधारा नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता की सांस्कृतिक आत्मा है। यह भारतीय जीवन–मूल्यों को संरक्षित करते हुए आधुनिक समाज में सांस्कृतिक चेतना का विकास करता है। भारतीय सांस्कृतिक विरासत विश्व के लिए शांति, सहअस्तित्व, आध्यात्मिकता और मानवीय मूल्यों का संदेश देती है, और हिंदुत्व इसी विरासत की अभिव्यक्ति है।

वीर सावरकर का हिंदुत्व आधुनिक भारत के राष्ट्रीय, सांस्कृतिक और राजनीतिक विमर्श का एक केंद्रीय स्तम्भ बन चुका है। भले ही इसके स्वरूप पर विभिन्न विचार हों, लेकिन यह निर्विवाद है कि भारतीय पहचान, सांस्कृतिक चेतना, राष्ट्रवाद और सुरक्षा नीति के क्षेत्र में सावरकर की विचारधारा का गहरा प्रभाव है। आधुनिक भारत अपने सांस्कृतिक मूल्यों के साथ वैश्विक शक्ति के रूप में उभर रहा है, और इस यात्रा में सावरकर के हिंदुत्व की गूंज स्पष्ट सुनाई देती है।

वीर सावरकर भारतीय राष्ट्रवाद के ऐसे विचारक हैं जिन्होंने भारतीय सांस्कृतिक विरासत को राष्ट्र–निर्माण का आधार माना। उनका हिंदुत्व भारतीयता की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सभ्यतागत एकता का प्रतीक है। सावरकर के लिए हिंदुत्व एक जीवंत सांस्कृतिक प्रवाह था, जो राष्ट्रीय चेतना को जागृत करता है, सांस्कृतिक आत्म–सम्मान को पुनर्स्थापित करता है, सामाजिक सुधार को दिशा देता है, आधुनिक राष्ट्र–राज्य को मजबूत बनाता है।

आज का भारत सांस्कृतिक पुनर्जागरण, आत्मनिर्भरता, राष्ट्रीय सुरक्षा, शिक्षा सुधार और वैश्विक सांस्कृतिक नेतृत्व की दिशा में कई रूपों में सावरकर की वैचारिक विरासत को आगे बढ़ाता प्रतीत होता है।

इस प्रकार, "हिंदुत्व और भारतीय सांस्कृतिक विरासत" के संदर्भ में सावरकर का विचार–समूह भारत की राष्ट्रीय पहचान और सांस्कृतिक आत्म–चेतना को समझने के लिए एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण और प्रासंगिक आधार प्रदान करता है। अतः यह कहा जा सकता है कि हिंदुत्व भारतीय सांस्कृतिक विरासत की निरंतरता, संरक्षण और पुनर्जागरण का माध्यम है, जो भारत के अतीत, वर्तमान और भविष्य को एक साझा सांस्कृतिक धागे में बांधने का कार्य करता है।

सन्दर्भ

1. सावरकर, विनायक दामोदर (2024) हिंदुत्व, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली ,भारत, पृष्ठ संख्या 18–21
2. तंवर, रघुवेंद्र, (2023) विनायक दामोदर सावरकर, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 17
3. सिंह, डॉ.चंद्र प्रकाश, (2024) हिंदू–दृष्ट,अशोक सिंघल, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 36–40
4. भावे,यशवंत गोपाल, (2009) विनायक दामोदर सावरकर, अर्चना प्रकाशन, भोपाल, मध्य प्रदेश, पृष्ठ संख्या 43–49
5. माहुरकर, उदय एवं चिरायु पंडित,(2024) वीर सावरकर, जो भारत का विभाजन रोक सकते थे और उनकी राष्ट्रीय सुरक्षा दृष्टि, प्रभात प्रकाशन,नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 124–127
6. मोडक, डॉ. अशोक,(2024) सावरकर विचार की प्रासंगिकता, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 82–86
7. भागवत, डॉ. मोहन, सोनी, श्री सुरेश, कुमार, श्री अरुण, (2024) वर्तमान संदर्भ में हिंदुत्व की प्रस्तुति, सुरुचि प्रकाशन, नई दिल्ली, भारत, पृष्ठ संख्या 11–18